कराहता दामोदर

दामोदर यानी दामुदा: या देवनद। कभी पश्चिम बंगाल का शोक समझा जानेवाला दामोदर, कालांतर में बिहार व पश्चिम बंगाल के लिए वरदान व समृद्धि का पर्याय बना। झारखंड में आदिवासी विरासत का प्रतीक रहे दामोदर में संस्कृति का साझापन समाहित रहा है। आदिवासी इससे इतना गहरा जुड़ाव रखते व पवित्र मानते हैं, जितना कि हिंदू गंगा को। आज भी संताल परिवार के लोग इसमें अस्थि का विसर्जन जरूर करते हैं। मगर आज दामोदर स्वयं मृत्युशैय्या पर लेटा खून के आंसू रो रहा है। दामोदर सिकुड़ता जा रहा है। जल इतना प्रदूषित कि 'जहर' कहना बेमानी न होगा। पूरे हालात पर प्रकाश डालती अनुपमा की खास रिपोर्ट :–

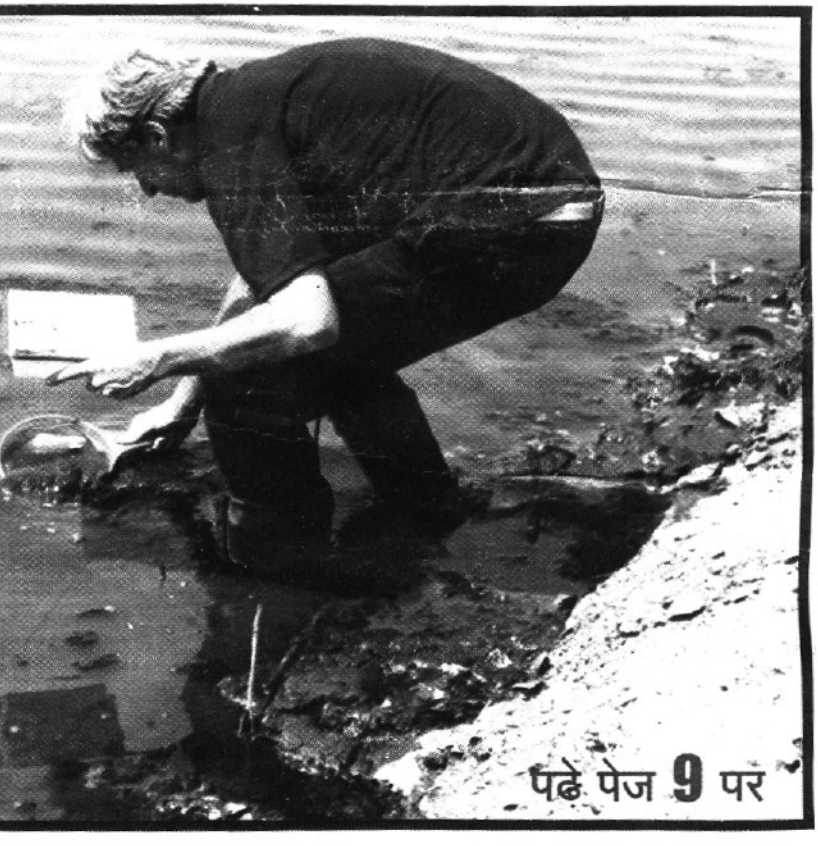

पढ़े पेज 9 पर

अनुपमा

एक समय बंगाल का शोक समझा जानेवाला दामोदर, कालांतर में बिहार व पश्चिम बंगाल के लिए वरदान व समृद्धि का पर्याय बना, मगर आज दामोदर स्वयं मृत्युशैय्या पर लेटा खून के आंसू रो रहा है। दामोदर सिकुड़ता जा रहा है। उथला होता जा रहा है। जल इतना प्रदूषित कि 'जहर' कहना बेमानी न होगा।

दामोदर यानी दामुदा: या देवनद। दामु दा: का अर्थ है मांदर की तरह सुरीली कल-कल बहती नदी। देवनद यानी देवतुल्य नदी। दामोदर झारखंड में आदिवासी विरासत का प्रतीक है। दामोदर में संस्कृति का साझापन समाहित है। यह आदिवासी जीवन की गतिशीलता व निश्छलता का भी प्रतीक है। आदिवासी इससे इतना गहरा जुड़ाव रखते व पवित्र मानते हैं, जितना कि हिंदू गंगा को। आज भी संताल परिवार के लोग इसमें अस्थि का विसर्जन जरूर करते हैं। इस नदी ने कृषि सभ्यता व औद्योगिक सभ्यता को पनपने का मौका दिया और फिर यही उसकी चूक हो गयी। खनन ने इसे बरबाद कर डाला। खनन व इससे जुड़ी गतिविधियां मसलन कोल वॉशरियां, कोक ओवन प्लांट्स, थर्मल पावर स्टेशन, स्टील प्लांट जैसी अन्य कोयला आधारित उद्योगों ने

झारखंड में दामोदर नदी में जल की गुणवत्ता

पीएच	7.1-8.15
अर्सेनिक	0.002
आयरन	5.40-12.50
जिंक	0.005-0.080
मैगनीज	0.46
फ्लोराईड	0.87
क्लोराईड	9.0-17.0
नाईट्रेट	6.0-22.2
कॉपर	नील-0.030
लीड	0.05-0.015
निकेल	0.02-0.025
बैक्टेरिया	100-2500
डीओ	3.0-6.0
बीओडी	9.0-17.0
सीओडी	275.0-470.0
टीएसएस	210.0-500.0

दामोदर को तो बरबाद किया ही है वहां आसपास बसे लोगों के जीवन को भी नारकीय बना डाला है। पहले अधिक पानी व तेज बहाव के कारण पेड़ों पर जमाव नहीं होता था परंतु अब दामोदर उथला हो गया है और स्लरी व अन्य अवशिष्टों को इसके किनारों पर फेंके जाने से इसका कैचमेंट एरिया (जल ग्रहण क्षेत्र) कम होता जा रहा है।

दामोदर नदी का उद्गम स्थल कमारपेट पहाड़ी के चूल्हा-पानी को माना जाता है। दामोदर झारखंड के हजारीबाग, रामगढ़, बोकारो, धनबाद, कोडरमा व गिरिडीह जिलों से होकर पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर जाता है। इसे घाटी का ऊपरी क्षेत्र कहा जाता है। इस क्षेत्र में सार्वजनिक उपक्रम की पांच बड़ी कोल कंपनियां सीसीएल, बीसीसीएल, एनसीएल (साउथ व नार्थ) वेस्ट बोकारो (ईस्ट और वेस्ट) तथा हजारीबाग क्षेत्र की कोयला खानें हैं। यदि सभी प्रकार के खानों की चर्चा की जाये तो ऊपरी क्षेत्र में कोयले की 183, लोहे की 28, लाइमस्टोन की 33, तांबे की 5 व अबरख की 84 खानें है। इन सभी इकाइयों का क्षेत्रफल 4000 वर्ग किलोमीटर भूखंड में विस्तारित है। कोयले पर आधारित यदि उद्योगों की चर्चा की जाये, जिसमें कोल वाशरियां, कोक ओवन प्लांट, जिंक प्लांट, ग्लास प्लांट, सीमेंट, खाद व रासायनिक उद्योगों का शामिल किया जाये, तो इनकी संख्या लगभग डेढ़ हजार के करीब है। छोटे-मोटे वर्कशॉपों की संख्या तो अनगिनत है। अब चर्चा करते हैं दामोदर पर आश्रितों की। उद्योगों की चर्चा तो हम पहले ही कर चुके हैं और इनमें कार्यरत लोगों की बात करें तो यह लगभग 20,000 है। डीवीसी दामोदर का पानी कनालो (केनल्स) के जरिये सिंचाई की व्यवस्था भी करता है। (खेती की बरबादी का एक कारक) इन कनालों की कुल लंबाई तकरीबन 2495 किलोमीटर है। तीसरा व सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि झारखंड की लगभग एक तिहाई आबादी दामोदर का पानी पीने को अभिशप्त है। अभिशप्त इसलिए कि आज दामोदर की गिनती दुनिया की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में है।

दामोदर नदी सर्वाधिक खनिज संपदा से संपन्न इलाके अर्थात झारखंड से होकर गुजरता है। यहां न केवल कोयला बल्कि तांबा, लोहा, अबरख, फायर क्ले, क्रोमाइट व चीनी मिट्टी जैस उद्योग प्रधान खनिज प्रचुरता में उपलब्ध हैं। और इन पर आधारित उद्योगों की संख्या भी यहां काफी अधिक है। इन उद्योगों ने भी दामोदर को प्रदूषित करने में कोई कसर बाकी नहीं रखा है। लेकिन प्रदूषण का सबसे बड़ा कारक है 15 कोल वाशरियां। इन वाशरियों में प्रतिदिन 3000 से 8000 टन के बीच कोयला धोने के लिए नदी में लाया जाता है। और इसका 20 फीसदी कोयला स्लरी के रूप में दामोदर में बहा दिया जाता है। दिखावे के लिए इन वाशरियों में स्लरी पौंड भी बनाये गये हैं पर यह नाकाफी है। ये पौंड प्रदूषण रोकने में अक्षम हैं। इसी कारण वाशरियों से निकलनेवाली स्लरी, ग्रीस, तेल और कोयले के छोटे टुकड़े तक सीधे नदी में गिरते हैं। जिससे नदी प्रदूषित व उथली होती है।

दामोदर को प्रदूषित करनेवाला दूसरा महत्वपूर्ण कारक है कोक ओवन प्लांट। ओवन कारखानों में कोयले को 1100 डिग्री तापमान तक ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में गर्म किया जाता है। इसके बाद इसका उपयोग ब्लास्ट फर्नेस व फाउंड्री में किया जाता है। इस गर्म किये गये अधजले कोयले को पानी से धोकर राख तथा अनावश्यक पदार्थो को हटाया जाता है। इस गंदे पानी को सीधे नदी में बहा दिया जाता है। इसमें सायनाइड जैसे घातक रासायनिक पदार्थ भी मिले होते हैं।

अब हम थोड़ी चर्चा विद्युत तापघरों की करते हैं। विद्युत तापघरों में कोयले की जितनी खपत होती है उसका आधा राख व ठोस के रूप में उनके द्वारा विसर्जित किया जाता है। हालांकि चिमनी से निकलनेवाली राख को नियंत्रित करने के लिए 5 एसपी (इलेक्टो स्टेटीक प्रीसीपेटर) का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन झारखंड में ज्यादातर तापघर 5 एसपी से कम क्षमतावाले हैं, जिस कारण वायु में राख का मिश्रण स्वाभाविक है।

दूसरी तरफ इनके वायलरों से निकलनेवाला जल युक्त राख (स्लरी) ऐश–पौंड में जमा किया जाता है। ताकि प्रदूषित जल नदी में न गिरे। परंतु बीटीपीएस के ऐश पौंड को देखकर यह भ्रम भी टूट जाता है। यहां ऐश–पौंड होने के बावजूद नदी का काला पानी सीधे कोनार में बहाया जा रहा है। कोनार 4–5 किलोमीटर आगे जाकर जरीडीह नामक स्थान पर दामोदर में मिलती है। गुलाचंद्र जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं व स्थानीय लोगों की अगुवाई में हुए विरोध के कारण प्रबंधन ने स्लरी को बहाने के लिए 20 करोड़ की लागत से ऐश–बुस्टिंग

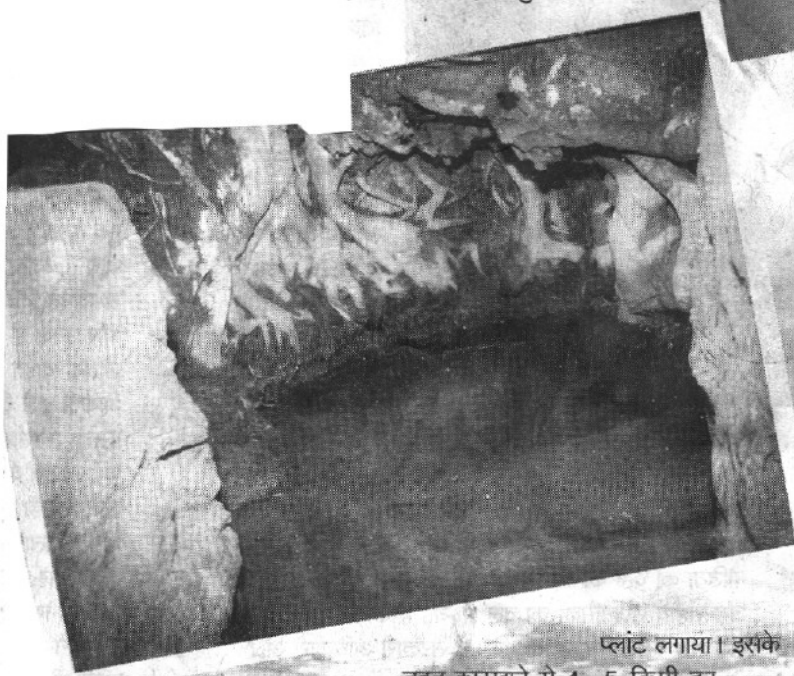

प्लांट लगाया। इसके तहत कारखाने से 4–5 किमी दूर (पिलपिलो) जंगल तक मोटा पाइप बिछाया गया। इसके लिए ऐश–बुस्टिंग स्टेशन का भी निर्माण हुआ। परंतु विडंबना यह है कि 20 करोड़ की लागत से बने इस परियोजना का एक दिन भी इस्तेमाल नहीं हुआ। अधिकारियों से पूछने पर पता लगा कि इसका उपयोग इसलिए नहीं हो पाया क्योंकि पाइप सतह से अत्यधिक ऊंचाई (95 फीट) पर बिछा दी गयी है।

दामोदर को प्रदूषण युक्त करने के लिए 1996 में ही एक योजना बनी थी (दामोदर एक्शन प्लान) डैप। परंतु अफसोस की यह योजना भी अपनी पहली समय सीमा व दूसरी में असफल रही। दामोदर एक्शन प्लान की प्रथम समय सीमा 2001 में थी। इस समय पर दामोदर को 'डी' श्रेणी से 'सी' में लाने की बात कही गयी थी। यदि इस योजना के बारे में जानने की कोशिश करें तो बेहद दुख होता है कि डैप की प्राथमिक नीति शहरी नालियों तथा शवों को दामोदर नदी में बहने से रोकना है। यानी यह स्पष्ट है कि यह प्लान सिर्फ और सिर्फ एक छलावा है। प्रथम चरण में 60 श्मशान घाट व शौचालय बनाने को प्राथमिकता दी गयी थी। जो कि गंगा एक्शन प्लान–2 की नकल है। यह सर्वविदित है कि दामोदर का प्रदूषण खदान व उससे जुड़े उद्योगों की वजह से है न कि सीवेज व श्मशानों से। इसका कारक तो कोल वाशरी, ताप विद्युत घर, स्टील कारखाने कोयला खदान आदि है। अधिकारियों के विवादों और मंशा साफ न होने की वजह से 25 करोड़ में से झारखंड सिर्फ एक करोड़ ही खर्च कर पाया है। और इससे कुल नालियों व शौचालय बनाये गये हैं। ऐसी दर्दनाक व विशद परिस्थिति में दामोदर सिर्फ अश्रुपूरित नेत्रों से बिलखता व कराहता हुआ शायद यही कह रहा होगा कि मैं जीना चाहता हूं। मुझे जीने दो। जीने दो।

(सीएसई मीडिया फेलोशिप के तहत शोध अध्ययन रिपोर्ट

अहले सुबह ही लाती हैं कोयला

सुबह के चार बजे हैं मालती, सुनैना, करमी टोकरी लेकर दौड़ रही है। उन्हें कोयला जो लाना है। पर यहां आसपास तो कोई खदान भी नहीं है। फिर कहां से? क्या कोई डिपो है या फिर...? नहीं! नदी से कोयला लाने जा रही हैं। आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि यह क्या बकवास है? क्या नदी में कोयला मिलता है। यदि खुले नेत्रों से इसे देखना हो तो बोकारो–धनबाद मार्ग चलिए। वहां तेलमचो पुल के पास सुबह से ही महिलाएं टोकरी लेकर घुटने भर पानी में बैठकर कुछ तलाशती नजर आएंगी। यह तलाश कोयले की है। लगभग एक–डेढ़ फीट गड्ढा करके ये महिलाएं नदी के पानी व बालू के नीचे से कोयला निकालकर एक स्थान पर इकट्ठा करती हैं और फिर टोकरी व बोरों में भरकर घर लाती है। इन कोयलों को फिर धूप में सूखाकर जलावन के रूप में प्रयुक्त करती हैं। प्रत्येक महिला एक दिन में 3–4 टोकरी कोयला निकालकर घर लाती है। कुछ जलावन से ज्यादा होनेपर इसे बेचती है। यह क्रम प्रतिदिन का है। धनबाद के महुदा थाना खेत्र में पड़नेवाली नदी में बोकारो 13 नंबर वॉशरी का कोयला बहकर यहां आता है। यह समस्या केवल इस वॉशरी की नहीं है। अमूमन सभी वाशरियों से कोयले के टुकड़े नदी में बहकर आते हैं और नदियों में प्रदूषण के साथ–साथ नदी को उथला बना रहे है। इस एक स्थान पर करीब 40–50 महिलाएं प्रतिदिन इतना कोयला निकालती हैं। इससे सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि कोयले व उसके साथ की गंदगी का आलम क्या है। बेरमो के आसपास कथरा, करगली, स्वांग आदि कोल वाशरियों का कचरा भी सीधे दामोदर में ही गिरता है और ऐसा ही दृश्य यहां के आसपास भी दिखायी पड़ता है।